# परिचय

वेदमूर्ति पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर की गणना भारत के अग्रणी वेद तथा संस्कृत भाषा के विशारदों में की जाती है। वे सौ वर्ष से अधिक जीवित रहे और आजीवन इनके प्रचार-प्रसार का कार्य करते रहे। उन्होंने सरल हिन्दी में चारों वेदों का अनुवाद किया और ये अनुवाद देशभर में अत्यन्त लोकप्रिय हुए। इसके अतिरिक्त योग के आसनों तथा सूर्य नमस्कार का भी उन्होंने बहुत प्रचार किया।

पं. सातवलेकर महाराष्ट्र के निवासी थे और व्यवसाय से चित्रकार थे। मुम्बई के सुप्रसिद्ध जे. जे. स्कूल आव आर्ट्स में उन्होंने विधिवत् कला की शिक्षा प्राप्त की थी। व्यक्ति चित्र (पोर्ट्रेट) बनाने में उन्हें विशेष कुशलता प्राप्त थी और लाहौर में अपना स्टूडियो बनाकर वे यह कार्य करते थे।

महाराष्ट्र वापस लौटकर उन्होंने तत्कालीन औंध रियासत में 'स्वाध्याय मंडल' के नाम से वेदों तथा संबंधित ग्रन्थों का अनुवाद तथा प्रकाशन कार्य आरंभ किया। सरल हिन्दी में वेद के ये पहले अनुवाद थे जो बहुत जल्द देशभर में पढ़े जाने लगे। संस्कृत भाषा सिखाने के लिए भी उन्होंने अपनी एक सरल पद्धति बनाई और इसके अनुसार कक्षाएँ चलानी आरम्भ कीं। पुस्तकें भी लिखीं जिन्हें पढ़कर लोग घर बैठे संस्कृत सीख सकते थे।

'संस्कृत स्वयं-शिक्षक' नामक यह पुस्तक शीघ्र ही एक संस्था बन गई और इस पद्धति का तेज़ी से प्रचार हुआ। संस्कृत को भाषा सीखने की दृष्टि से एक कठिन भाषा माना जाता है, इसलिए भी इस सरल विधि का व्यापक प्रचार हुआ। इसे दरअसल संस्कृत सीखने की 'सातवलेकर पद्धति' ही कहा जा सकता है। यह 70-80 वर्ष पहले लिखी गई थी। आज भी इसकी उपादेयता कम नहीं हुई और आगे भी इसी प्रकार बनी रहेगी।

औंध में स्वाध्याय मंडल का कार्य बड़ी सफलता से चल रहा था, कि तभी 1948 में महात्मा गांधी की हत्या की घटना हुई। नाथूराम विनायक गोडसे चूँकि महाराष्ट्रीय और ब्राह्मण थे, इसलिए सारे महाराष्ट्र में ब्राह्मणों पर हमले करके उनकी सम्पत्तियाँ इत्यादि जलाई गईं। इसी में पं. सातवलेकर के संस्थान को भी जलाकर नष्ट कर दिया गया। वे स्वयं किसी प्रकार बच निकले और उन्होंने गुजरात के सूरत ज़िले में स्थित पारडी नामक स्थान में फिर नये सिरे से स्वाध्याय मंडल का कार्य संगठित किया। 1969 में अपने देहान्त के समय तक वे यहीं कार्यरत रहे।

भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में 'संस्कृत स्वयं-शिक्षक' एक वैज्ञानिक तथा अत्यन्त सफल पुस्तक है।

## पुस्तक प्रारम्भ करने से पहले इसे अवश्य पढ़ें–

इस पुस्तक का नाम 'संस्कृत स्वयं-शिक्षक' है और जो अर्थ इस नाम से विदित होता है वही इसका कार्य है। किसी पंडित की सहायता के बिना हिन्दी जानने वाला व्यक्ति इस पुस्तक के पढ़ने से संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। जो देवनागरी अक्षर नहीं जानते, उनको उचित है कि पहले देवनागरी पढ़कर फिर पुस्तक को पढ़ें। देवनागरी अक्षरों को जाने बिना संस्कृत जानना कठिन है।

बहुत से लोग यह समझते हैं कि संस्कृत भाषा बहुत कठिन है, अनेक वर्ष प्रयत्न करने से ही उसका ज्ञान हो सकता है। परन्तु वास्तव में विचार किया जाए तो यह भ्रम-मात्र है। संस्कृत भाषा नियमबद्ध तथा स्वभावसिद्ध होने के कारण सब वर्तमान भाषाओं से सुगम है। मैं यह कह सकता हूँ कि अंग्रेज़ी भाषा संस्कृत भाषा से दस गुना कठिन है। मैंने वर्षों के अनुभव से यह जाना है कि संस्कृत भाषा अत्यंत सुगम रीति से पढ़ाई जा सकती है और व्यावहारिक वार्तालाप तथा रामायण-महाभारतादि पुस्तकों का अध्ययन करने के लिए जितना संस्कृत का ज्ञान चाहिए, उतना प्रतिदिन घंटा-आधा-घंटा अभ्यास करने से एक वर्ष की अवधि में अच्छी प्रकार प्राप्त हो सकता है, यह मेरी कोरी कल्पना नहीं, परंतु अनुभव की हुई बात है। इसी कारण संस्कृत-जिज्ञासु सर्वसाधारण जनता के सम्मुख उसी अनुभव से प्राप्त अपनी विशिष्ट पद्धति को इस पुस्तक द्वारा रखना चाहता हूँ।

हिन्दी के कई वाक्य इस पुस्तक में भाषा की दृष्टि से कुछ विरुद्ध पाए जाएँगे, परन्तु वे उस प्रकार इसलिए लिखे गए हैं कि वे संस्कृत वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के क्रम के अनुकूल हों। किसी-किसी स्थान पर संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी उसके नियमों के अनुसार नहीं लिखा है तथा शब्दों की संधि कहीं भी नहीं की गई है। यह सब इसलिए किया गया है कि पाठकों को भी सुभीता हो और उनका संस्कृत में प्रवेश सुगमतापूर्वक हो सके। पाठक यह भी देखेंगे कि जो भाषा की शैली की न्यूनता पहले पाठों में है, वह आगे के पाठों में नहीं है। भाषा-शैली की कुछ न्यूनता सुगमता के लिए जान-बूझकर रखी गई है, इसलिए पाठक उसकी ओर ध्यान न देकर अपना अभ्यास जारी रखें, ताकि संस्कृत-मंदिर में उनका प्रवेश भली-भाँति हो सके।

पाठकों को उचित है कि वे न्यून-से-न्यून प्रतिदिन एक घंटा इस पुस्तक का अध्ययन किया करें और जो-जो शब्द आएँ उनका प्रयोग बिना किसी संकोच के करने का यत्न करें। इससे उनकी उन्नति होती रहेगी।

जिस रीति का अवलम्बन इस पुस्तक में किया गया है, वह न केवल सुगम है, परन्तु स्वाभाविक भी है, और इस कारण इस रीति से अल्प काल में और थोड़े-से परिश्रम से बहुत लाभ होगा।

यह मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि प्रतिदिन एक घंटा प्रयत्न करने से एक वर्ष के अन्दर इस पुस्तक की पद्धति से व्यावहारिक संस्कृत भाषा का ज्ञान हो सकता है। परन्तु पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि केवल उत्तम शैली से ही काम नहीं चलेगा, पाठकों का यह कर्तव्य होगा कि वे प्रतिदिन पर्याप्त और निश्चित समय इस कार्य के लिए अवश्य लगाया करें, नहीं तो कोई पुस्तक कितनी ही अच्छी क्यों न हो, बिना प्रयत्न किए पाठक उससे पूरा लाभ नहीं उठा सकते।

## अभ्यास की पद्धति

(1) प्रथम पाठ तक जो कुछ लिखा है, उसे अच्छी प्रकार पढ़िए। सब ठीक से समझने के पश्चात् प्रथम पाठ को पढ़ना प्रारम्भ कीजिए।

(2) हर एक पाठ पहले सम्पूर्ण पढ़ना चाहिए, फिर उसको क्रमशः स्मरण करना चाहिए; हर एक पाठ को कम-से-कम दस बार पढ़ना चाहिए।

(3) हर एक पाठ में जो-जो संस्कृत वाक्य हैं, उनको कंठस्थ करना चाहिए तथा जिन-जिन शब्दों के रूप दिए हैं, उनको स्मरण करके, उनके समान जो शब्द दिए हों, उन शब्दों के रूप वैसे ही बनाने का यत्न करना चाहिए।

(4) जहाँ परीक्षा के प्रश्न दिए हों, वहाँ उनका उत्तर दिए बिना आगे नहीं बढ़ना चाहिए। यदि प्रश्नों का उत्तर देना कठिन हो, तो पूर्व पाठ दुबारा पढ़ना चाहिए। प्रश्नों का झट उत्तर न दे सकने का यही मतलब है कि पूर्व पाठ ठीक प्रकार से तैयार नहीं हुए।

(5) जहाँ दुबारा पढ़ने की सूचना दी है, वहाँ अवश्य दुबारा पढ़ना चाहिए।

(6) यदि दो विद्यार्थी साथ-साथ अभ्यास करेंगे और परस्पर प्रश्नोत्तर करके एक-दूसरे को मदद देंगे तो अभ्यास बहुत शीघ्र हो सकेगा।

(7) यह पुस्तक तीन महीनों के अभ्यास के लिए है। इसलिए पाठकों को चाहिए कि वे समय के अन्दर पुस्तक समाप्त करें। जो पाठक अधिक समय लेना चाहें, वे ले सकते हैं। यह पुस्तक अच्छी प्रकार स्मरण होने के पश्चात् ही दूसरी पुस्तक प्रारम्भ करनी चाहिए।

## अक्षर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ए ऐ ओ औ अं अः।
क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ,
ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न,
प फ ब भ म, य र ल व,
श ष स ह, क्ष त्र ज्ञ।

## शुद्ध स्वर

अ, इ, उ, ऋ, ऌ,
ये पांच शुद्ध स्वर हैं।

### संयुक्त स्वर

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | और | अ | अथवा | आ | मिलकर | आ–बना है |
| इ | ” | इ | ” | ई | ” | ई–बनी है |
| उ | ” | उ | ” | ऊ | ” | ऊ–बना है |
| ऋ | ” | ऋ | ” | ॠ | ” | ॠ–बनी है |
| अ | ” | इ | ” | ई | ” | ए–बना है |
| आ | ” | इ | ” | ई | ” | ए–बना है |
| अ | ” | उ | ” | ऊ | ” | ओ–बना है |
| आ | ” | उ | ” | ऊ | ” | ओ–बना है |
| अ / आ | ” | ए | ” | ऐ | ” | ऐ–बना है |
| अ / आ | ” | औ | ” | अ | ” | औ–बना है |

### स्वर-जन्य अक्षर (स्वरों से बने हुए अक्षर)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ | अथवा | ई स्वर | अ | के साथ | मिलकर | “य” | बनाता है | |
| उ | ” | ऊ | अ | ” | ” | “व” | ” | ” |
| ऋ | ” | ॠ | अ | ” | ” | “र” | ” | ” |
| ऌ | ” | ॡ | अ | ” | ” | “ल” | ” | ” |

## संयुक्त व्यञ्जन

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क् | और | ष् | मिलकर | क्ष [क्ष] | बना है |
| ज् | ” | ञ | ” | ज्ञ [ज्ञ] | ” |
| क् | ” | व | ” | क्व [क्व] | ” |
| र् | ” | म | ” | र्म | ” |
| म् | ” | र | ” | म्र | ” |
| त् | ” | र | ” | त्र | ” |
| द् | और | र | मिलकर | द्र | बना है |
| त् | ” | य | ” | त्य | ” |
| प् | ” | त | ” | प्त | ” |
| ल् | ” | ल | ” | ल्ल | ” |
| ह् | ” | य | ” | ह्य | ” |
| व् | ” | र | ” | व्र | ” |
| क् | ” | र | ” | क्र | ” |
| म् | ” | न | ” | म्न | ” |
| स् | ” | र | ” | स्र | ” |
| ब् | ” | द | ” | ब्द | ” |
| द्– | र् – | य | ” | द्र्य | ” |
| प्– | त् – | य | ” | प्त्य | ” |
| श्– | र् – | य | ” | श्र्य | ” |

इस प्रकार संयुक्त अक्षर अनन्त हैं। हिन्दी भाषा के पाठकों को उचित है कि वे इस संयुक्त अक्षर पद्धति को जानें ताकि वे अच्छी तरह संयुक्त अक्षरों को पढ़ सकें।

## कुछ स्वरों की सन्धि

ए + अ=अय ऐ + अ=आय ओ + अ=अव
औ + अ=आव होता है

इसी प्रकार अन्य स्वर मिलने पर पाठक सन्धि जान सकेंगे

ए + आ=अया। ऐ + ई=आयी।
ओ + उ=अवु। औ + ऊ=आवू।
ए + ए=अये। ऐ + ओ=आयो।
ओ + ए=अवे। औ + ओ=आवो।

इस प्रकार 'ए, ऐ, ओ, औ' की सन्धि पाठक जान सकेंगे

# पाठ 1

नीचे कुछ संस्कृत शब्द और उनके अर्थ दिए हुए हैं। फिर उनके वाक्य बनाये हैं। संस्कृत भाषा के शब्द काले टाइप में छपे हैं।

## शब्द

**सः**=वह। **त्वम्**=तू। **अहम्**=मैं।
**गच्छति**=वह जाता है। **गच्छसि**=तू जाता है।
**गच्छामि**=मैं जाता हूं।

## वाक्य

**अहं गच्छामि**=मैं जाता हूं। **त्वं गच्छसि**=तू जाता है।
**सः गच्छति**=वह जाता है।
पाठक यहां ध्यान रखें कि संस्कृत वाक्यों का भाषा में अर्थ शब्द के क्रम से ही दिया गया है।

## शब्द

**कुत्र**=कहां। **यत्र**=जहां। **अत्र**=यहां।
**तत्र**=वहां। **सर्वत्र**=सब स्थान पर। **किम्**=क्या।

## वाक्य

1. **त्वं कुत्र गच्छसि**–तू कहां जाता है ?
2. **यत्र सः गच्छति**–जहां वह जाता है।
3. **अहं तत्र गच्छामि**–मैं वहां जाता हूं।
4. **सः कुत्र गच्छति**–वह कहां जाता है ?
5. **यत्र अहं गच्छामि**–जहां मैं जाता हूं।
6. **त्वं सर्वत्र गच्छसि**–तू सब स्थान पर जाता है।
7. **किं सः गच्छति**–क्या वह जाता है ?
8. **सः गच्छति किम्**–वह जाता है क्या ?
9. **सः कुत्र गच्छति**–वह कहां जाता है ?
10. **यत्र त्वं गच्छसि**–जहां तू जाता है।
11. **त्वं गच्छसि किम्**–तू जाता है क्या ?
12. **अहं सर्वत्र गच्छामि**–मैं सब स्थान पर जाता हूं।

पाठकों को ये सब वाक्य ध्यान में रखने चाहिए। यदि दो पाठक साथ-साथ

पढ़ते हों, तो एक-दूसरे से संस्कृत तथा हिन्दी के वाक्य उच्चारण करके अर्थ पूछने चाहिए, और दूसरे को चाहिए कि वह अर्थ बताए। परन्तु यदि अकेला ही पढ़ता हो तो उसे प्रथम ऊंची आवाज़ में प्रत्येक वाक्य दस बार उच्चारण करके तत्पश्चात् संस्कृत वाक्यों की ओर दृष्टि देकर उनका अर्थ भाषा के वाक्यों की ओर दृष्टि न देते हुए मन से लगाने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा दो-तीन बार करने से सब वाक्य याद हो सकते हैं।

जो पाठक इन वाक्यों की ओर ध्यान देंगे उनको उक्त शब्दों से कई अन्य वाक्य स्वयं रचने की योग्यता आएगी और पता लगेगा कि थोड़े-से शब्दों से कितनी बातचीत हो सकती है।

## शब्द

**न**–नहीं। **अस्ति**–है। **कः**–कौन। **नास्ति**–नहीं है।

## वाक्य

1. **अहं न गच्छामि**–मैं नहीं जाता हूं।
2. **त्वं न गच्छसि**–तू नहीं जाता है।
3. **सः न गच्छति**–वह नहीं जाता है।
4. **अहं तत्र न गच्छामि**–मैं वहां नहीं जाता हूं।
5. **त्वं सर्वत्र न गच्छसि**–तू सब स्थान पर नहीं जाता है।
6. **किं सः न गच्छति**–क्या वह नहीं जाता है।
7. **यत्र त्वं न गच्छसि**–जहां तू नहीं जाता है।
8. **त्वं न गच्छसि किम्**–तू नहीं जाता है क्या ?
9. **अहं सर्वत्र न गच्छामि**–मैं सब स्थान पर नहीं जाता हूं।

**सूचना**–पाठक यह देख सकते हैं कि **केवल एक 'न' (नकार) के उपयोग से कितने नये उपयोगी वाक्य बन गए हैं। अब 'क' शब्द का उपयोग देखिए–**

1. **कः तत्र गच्छति**–कौन वहां जाता है ?
2. **कः सर्वत्र गच्छति**–कौन सब स्थान पर जाता है ?
3. **तत्र कः न गच्छति**–वहां कौन नहीं जाता ?
4. **कः सर्वत्र न गच्छति**–कौन सब स्थान पर नहीं जाता ?
5. **कः तत्र अस्ति**–कौन वहां है ?
6. **तत्र कः अस्ति**–वहां कौन है ?
7. **अस्ति कः तत्र**–है कौन वहां ?